हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

विभागीय परीक्षा सत्र नवम्बर–2023

पेपर 2+4 हिन्दी (लिखित) अंक–60 समय–2 घण्टे

नोटः– 1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। कुल प्रश्न–7
2. प्रत्येक प्रश्न के अंक कोष्ठक में दिये गये है।

प्रश्न–1 **Translate into Hindi a passage in English**
(निम्नलिखित गद्यांश का अनुवाद हिंदी में करें।)

Before you can do wonders in the outside world, you must first raise your standards about what you can do in your inner world. The essence of effective personal management is effective mind management. And the essence of effective management is mental discipline which is nothing more that controlling each and every thought to ensure that it is a useful and good one. Every thought concentrated in the direction of your dreams is like a little nugget of gold, advancing you confidently in direction of lasting life wealth.

When your every thought is in the direction of where you want to go in your life, that is in the direction written clearly in your mission statement, your actions follow and become productive ones. Everything is created twice: once as a blueprint in the mind's eye and later in your reality. The process is very similar to the work of an architect who first draws a sketch and plan of the way things will look in the new building and then methodically follows his blueprint to create the structure.

The guiding principle of effective personal management is a simple one: put your life goals first. The things which truly matter to you should never take a backseat to those which matter very little. By your mission statement, you know very precisely what matters most to you. It may be becoming the very best family man that you can be or the kindest mother ever to walk the face of this earth. Your life's goals may be to become wildly rich or famous. The key now is to see that every thought and action taken in the direction of these goals will get you closer to them. Remember the 80/20 Rule: 80% of the results come from 20% of your activities. (15 अंक)

प्रश्न–2 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या सरल हिंदी में करें।
(Rendering into simple Hindi a passage in Hindi)

बड़ी चीजें संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है।

आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से पैदा होते हैं। जिंदगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो आदमी बड़े–से–बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम–कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली या जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए–दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए, जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं, जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है।

इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं वे जिंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो, तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है। साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं।

जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस–पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं। (10 अंक)

प्रश्न–3 वित्त विभाग द्वारा अनुकम्पा आधार (**Compassionate grounds**) पर रोज़गार सहायता प्रदान करने हेतु प्राप्त मामलों की जाँच व निपटान बारे जाँच–सूची ज़ारी की गई है। सचिव, वित्त विभाग द्वारा समस्त विभागाध्यक्षों को जाँच–सूची में सम्मिलित बिंदुओं का उल्लेख करते हुए मामलों की जाँच पड़ताल हेतु निर्देश पत्र लिखें। (10 अंक)

प्रश्न–4 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें।

1. Accountable
2. Biennial report
3. Discretionary grant
4. Drawee
5. Corroborate
6. Lower rung
7. Feasibility
8. Redundant (8 अंक)

प्रश्न–5 निम्न मुहावरों व लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट कर वाक्यों में प्रयोग करें।

1. गर्दन पर छुरी फेरना।
2. जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई।
3. कलम तोड़ना।

4. बोए पेड़ बबूल का आम कहाँ से होए।
5. घर घाट एक करना। (5 अंक)

प्रश्न–6 निम्न वाक्यों/शब्दों को शुद्ध रुप में लिखें।

1. अध्यन।
2. प्रमाणिक।
3. भारतिय।
4. केन्द्रिय।
5. यथोचीत।
6. हमने इस विषय को विचार किया।
7. हिमाचल में कई दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं। (7 अंक)

प्रश्न–7 निम्न अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करें।

1. भलाई चाहने वाला।
2. जिसे गुप्त रखा जाये।
3. जिसके नीचे रेखा हो।
4. जिसकी आशा की गई हो।
5. कम खर्च करने वाला। (5 अंक)

हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

हिंदी (मौखिक)

पेपरः 2+4 परीक्षा सत्र नवम्बर–2023 अंक 40 समयः 1 घण्टा

Reading a passage & conversation (लेखांश का पठन व चर्चा)

कोरोना पैनडेमिक को देखते हुए कहा जा रहा है कि भारत में कृषि द्वारा ही देश का आर्थिक पुनरूद्धार संभव है। कोविड–19 लॉकडाउन के दौरान कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्याएँ जिनका सामना किया गया, वे थी सप्लाई चेन में व्यवधान, बाज़ार–पहुँच की समाप्ति, मंडियों का बंद होना एवं उपभोक्ता खाद्य मांग में कमी। इस दौरान सरकार द्वारा कृषि समस्याओं को दूर करने हेतु कई कदम उठाए गए एवं आशा व्यक्त की गई कि शायद इससे देश के आर्थिक पुनरूद्धार को बल मिले। कृषि का महत्व सिर्फ वर्तमान में ही नहीं अपितु इसे मानव सभ्यता का मूलाधार माना जाता है।

भारत की पारंपरिक कृषि पर्यावरण हितैषी थी एवं उस समय कृषि पशुपालन पर आधारित थी जिसके कारण किसानों की लागत काफी कम होती थी। उत्पादन भी इतना था कि जीवन–यापन आराम से हो सके। उस समय के कृषि उत्पादों की गुणवत्ता भी अच्छी थी। हालाँकि कृषि में तकनीकी के प्रवेश ने किसानों के आगत में वृद्धि की लेकिन इससे भूमि तथा कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में कमी आई। आधुनिक तकनीकी ने उस कृषि अपशिष्ट को खेत में ही जलाने को मजबूर कर दिया, जो कि पशुओं का आहार था। गोबर खाद के स्थान पर रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग ने भूमि की उर्वरा शक्ति को नष्ट कर दिया। हरित क्रांति ने फसल विशेष के उत्पादन में वृद्धि तो की लेकिन अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन की समस्या के साथ इस क्षेत्र द्वारा कई प्रकार की चुनौतियों का सामना किया जा रहा है। इन चुनौतियों में शामिल हैं–आधारभूत संरचना का अभाव, सीमित निवेश, उत्पादकता में कमी, साख की कमी, मौसम आधारित कृषि एवं वाणिज्यीकरण का अभाव, तकनीकी अलगाव तथा नवाचार, शोध एवं अनुसंधान की कमी इत्यादि।

भारतीय कृषि की समस्याओं के संदर्भ में सबसे निर्णायक बिंदु मानसून पर निर्भरता है। भारत में वर्षा की स्थिति न सिर्फ अनियमित है, बल्कि अनिश्चित भी है। वर्षा की अधिकता के कारण आँधी, बाढ़, तूफान, कीटों का प्रकोप जैसी आपदाएँ जन्म लेती हैं, जिसकी वजह से भारतीय किसानों को क्षति उठानी पड़ती है।

विडंबना यह है कि इन समस्याओं का अभी तक कोई समुचित हल नहीं ढूँढा गया है एवं न ही कोई सुनिश्चित तंत्र विकसित हो पाया है। परिणामतः कृषक तमाम उद्यम के बावजूद निर्धनता का संजाल नहीं तोड़ पाए हैं।

देश में सिंचाई के वैकल्पिक साधन मौजूद हैं लेकिन इनका वितरण बहुत ही असमान एवं अविकसित है। साथ ही सीमांत एवं छोटी जोतों तक इनकी पहुँच भी सुनिश्चित नहीं है। अन्य समस्या है भूमि की उर्वरा शक्ति का क्षीण होना जो कि सदियों से एक ही भूमि पर कृषि करने का परिणाम है। भू–क्षरण एवं जल रिसाव की समस्या ने भी देश में मृदा की उर्वरा शक्ति को क्षीण किया है। साथ ही रासायनिक खादों के अंधाधुंध एवं अनियोजित प्रयोग से

भूमि की उत्पादकता लगातार कम हो रही है। जोतों का लगातार छोटा होना भी कृषि की प्रमुख समस्या है। दोषपूर्ण भू–स्वामित्व और असमान वितरण प्रणाली ने कृषि को पूरी तरह नुकसान पहुँचाया है।

कृषि भारत की अधिकांश जनता की आजीविका का साधन है। कृषि पर जनसंख्या वृद्धि का दबाव सहज ही महसूस किया जा सकता है। यही कारण है कि भारतीय कृषि में सर्वाधिक छिपी और मौसमी बेरोज़गारी पाई जाती है। भारतीय कृषि में शिक्षा का नितांत अभाव पाया जाता है। अशिक्षा के चलते किसान अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते। इसी कारण संगठनात्मक प्रवृति के अभाव के कारण किसान प्रशासन और नीतियों का लाभ नहीं उठा पाते एवं शोषित होते रहते हैं। किसानों की बढ़ती आत्महत्या की घटनाओं के मूल में सूदखोरों द्वारा उच्च ब्याजदर पर दिया गया ऋण होता है, कृषि उत्पादन कम होने के कारण ऋण न चुका पाने की स्थिति में किसान विवशता में मृत्यु का वरण करता है।

भविष्य में उत्पादकता बढ़ाने हेतु कृषि क्षेत्र का तकनीकी क्षेत्र से जुड़ाव अत्यंत आवश्यक है। किसानों को जागरूक बनाने के उद्देश्य से अनेक प्रकार के मोबाइल ऐप्स का विकास किया गया है साथ ही विपणन व्यवस्था की कमियों को दूर करने हेतु राष्ट्रीय कृषि बाज़ार (**e-NAM**) का विकास किया गया है, इसके लिये देश की अन्य मंडियों को भी जोड़ा जा रहा है ताकि फसलों की कीमत संबंधी एकरूपता एवं पारदर्शिता बनी रहे। भारत सरकार द्वारा देश के कृषि क्षेत्र की भविष्य की दिशा तय करने हेतु नई राष्ट्रीय नीति की घोषणा की गई है।

इन सभी प्रयासों के बावजूद कुछ ध्यान देने योग्य मुद्दे हैं, जैसे– कृषि क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान पर व्यय की सीमा में वृद्धि एवं कृषि क्षेत्र को जैव प्रौद्योगिकी के लाभों से जोड़ना। भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की जलवायु कृषि अनुरूप है, अतः प्राकृतिक एवं मानवीय प्रयासों के सम्मिलित प्रभाव के परिणामस्वरूप यहाँ कृषि क्षेत्र का भविष्य उज्जवल दिखाई देता है।